

KATHÁS. 62, 224. नगरं प्रविशन् आतः समं सैचैरुद्ध्यत RĀGA-TAR. 5, 451.
 KATHÁS. 18, 392. रुद्ध Gobh. 2, 3, 9. R. 1, 28, 23, 7, 36, 42. Vikr. 121. Spr.
 4818. KATHÁS. 42, 46, 45, 246 (रुद्धाः zu lesen). व्यूहप्रवेशतः 48, 29. RĀGA-
 TAR. 3, 19, 51. 4, 248, 6, 44. सकृदपुः 49. Vet. in LĀ. (III) 17, 22, v. l. रणे
 रुद्धः HARIV. 9199 nach der Lesart der neueren Ausg. मैथुनरुद्धस्य पा-
 ऐडोः im Beischlaf gehemmt, dem der Beischlaf gewehrt war Bhāg. P. 9,
 22, 26. (निप्तान्) गिरीनरैत्सीत् BHATT. 15, 80. नदीं शुक्तिमतीं गिरिः ।
 श्रैरैत्सीत् MBh. 1, 2367. HARIV. 11207. R. 7, 32, 15, 18. Bhāg. P. 9, 15, 20.
 zurückstossen BHATT. 8, 80. अस्त्रे रुद्धे MBh. 5, 7205. R. 3, 33, 48. शक्यते
 नैव रोद्धुं च कथमप्यधुना मया (प्रवरूपम्) ich kann das Schiff nicht zu-
 rückhalten KATHÁS. 26, 14. पानपात्रमकस्माद्भवद्भुङ्क्त्वा व्यासक्तमिव केन-
 चित् 18, 294. 298. 303. धारयामास जीवितम् । हृदि प्रविष्टया रुद्धं तत्प्र-
 त्यागमवाञ्छया 230. zurückhalten, festhalten, vor einem Falle bewah-
 ren: आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां सन्धःपाति प्रणयि हृदयं
 विप्रयोगे रूपाद्धि MEGH. 10. करेण रुद्धो ऽपि हि केशपाशः RAGH. 7, 6. क-
 ररुद्धनीवि (वसन) ČiC. 9, 75. — 2) hemmen, unterdrücken, verhindern,
 wehren: प्राणम् AV. 11, 3, 55. औषधिर्रुद्धवीर्यं RAGH. 2, 32. Bhāg. P. 3,
 8, 11, 4, 22, 39. रुन्धन्निधि धिया शुचः 9, 11, 16. रूपाद्ध्यागमम् VARĀH. BRH.
 S. 53, 62. रुद्धगिरि Bhāg. P. 10, 82, 14. 60, 23. Spr. 2083. रोद्धुं कृषितम्
 2084. रुद्धतटाभिमुष्य (d. i. रुद्ध + तटा°, nicht रुद्ध - तट + आ°) 2586.
 भवतामननुज्ञातं (subj.) रूपाद्धि मम विक्रमम् R. 5, 58, 7. अरुद्धं च पराक्र-
 मम् BHATT. 15, 63. रुद्धालोके नरपतिपथे MEGH. 38. रुद्धा दृष्टिः DAČAK. 73,
 5. निद्रा नयनसलिलोत्पीडरुद्धावकाशाम् MEGH. 88. रुद्धापाङ्गप्रसर 93.
 प्राणापानगती रुद्धा Bhāg. 4, 29. विपति वक्तुं नत्त्राणां गतीरपि PRAB.
 54, 13. दिव्यानां च गती रोद्धुम् KATHÁS. 33, 188. रुरुधुस्तस्य प्रवेशम् 18,
 107, 46, 201. नितिभृद्भुङ्क्त्वा RĀGA-TAR. 2, 38. रुद्धप्रवाहा वितस्ता 4,
 703. डुरतिपाको दलिणाभिश्च रुद्धः VARĀH. BRH. S. 46, 17. रणारेणो रु-
 रुधिरौ रुधिरौण सुरादिषाम् der Staub wurde gebunden RAGH. 9, 21. किं
 रुद्धं ते मयाशनम् habe ich dir das Essen versagt? KATHÁS. 27, 35. भूमा-
 वरुन्धती ध्याता रुन्धत्यपि सतीधुरम् (so ist zu schreiben) die oberste
 Stelle der tugendhaften Frauen (anderen Frauen) versagend d. i. selbst an
 der Spitze der tugendhaften Frauen stehend 80. मन्त्रा रुद्धाः gehemmt, nicht
 wirkend SARVADARJANAS. 171, 10. — 3) zurückhalten so v. a. bei sich be-
 halten: श्रेरे श्रुद्धिषमैरात् AV. 10, 4, 26. so v. a. sparen, kargen mit
 (acc.): त्वं त्रिगिश्च न धनीं हरोधिथ RV. 1, 102, 10. तस्मै कृषोमि न धनी
 रूपाद्धि 10, 34, 12. यो देवकामो न धनी रूपाद्धि 42, 9. — 4) einschliessen,
 einsperren in (loc.): विमाने तां हरोध R. 7, 24, 2. रुरुधुस्तं महीपालं पुरे
 MĀRK. P. 122, 14. रावणात्पुरे रुद्धा R. 4, 58, 25. 6, 10, 11. M. 9, 12. Bhāg.
 P. 1, 8, 23. 4, 28, 60. 7, 1, 27. मनः — हृदि रुन्ध्याच्छनैः 15, 33. गर्तरुद्ध
 श्वारगः R. 4, 34, 2. आत्मरुद्धानि (औषधिबीजानि) Bhāg. P. 4, 17, 24. mit
 doppeltem acc.: हरोध गोकुलं गोपीः VOP. 5, 6. einen Weg versperren:
 रुद्धा रथमार्गम् R. 3, 56, 8. MEGH. 100. रूपाद्धि सवितुर्मार्गम् BHATT. 6, 35.
 einen Feind, einen Ort einschliessen, belagern, besetzen: एकं रुद्धा स्थि-
 ताः सतो रुद्धाः स्मो ऽन्येन शत्रुणा KATHÁS. 49, 70. अरूपाद्यवनः साकेतम्,
 अरूपाद्यवना माध्यमिकान् PAT. in Ind. St. 5, 151. लङ्काया उत्तरं द्वारम् R.
 6, 16, 25. हरोध च गृहं तस्य KATHÁS. 17, 81. 43, 104. 88, 26. fg. 112, 163.
 यत्संप्रति गृहमपि मे बलवत्तरेण मकरेण रुद्धम् besetzt PAÑKĀT. 227, 21.
 अरुन्धता पुरीम् MBh. 3, 638. 15237. R. GORR. 1, 68, 19. 21. 6, 16, 55 (med.).

VI. Theil.

VARĀH. BRH. S. 7, 19. Bhāg. P. 3, 3, 10. 4, 28, 2. 8, 15, 23 (med.). BHATT.
 15, 10. पुरं चारुध्यतारिणा MĀRK. P. 37, 18. BHATT. 14, 29. KATHÁS. 51,
 105. Bhāg. P. 9, 10, 17. verschliessen: नगरद्वारम् R. 4, 9, 66. RĀGA-TAR.
 5, 431. रुद्धा गुहाः किम् Spr. 4053. (वायुः) हरोध सर्वभूतानि यथा वर्षाणि
 वासवः R. 7, 33, 50. 58. — 5) verhüllen, verdecken: अर्कं रुन्ध्यां शैः R.
 3, 55, 10. 4, 27, 9. 37, 29. RAGH. 14, 82. KATHÁS. 108, 7. RĀGA-TAR. 3, 60.
 शरीरतरितं रुन्धतुः (sic) R. 6, 90, 17. MRĀĪH. 76, 6. RĀGA-TAR. 2, 139.
 भूतं (ein Wesen) रुन्धानं रोदसी शरीरेण VARĀH. BRH. S. 53, 2. द्यो (die
 neuere Ausg.) भुवं चैव रुन्धेय (रुन्धेयम् ed. Calc.) HARIV. 303. वस्त्रात्त-
 रुद्धवक्त्राः MRĀĪH. 159, 18. घनतिमिररुद्धे च नयने Spr. 1615. शोकाद्भव-
 वाष्परुद्धदशः VARĀH. BRH. S. 3, 14. KATHÁS. 14, 24. Spr. 2277. Bhāg. P.
 1, 13, 30. 4, 30, 44. मेघरुद्ध MBh. 5, 7195. चरणार्धरुद्धवसुध so v. a. mit
 dem halben Fusse den Erdboden berührend Spr. 1246. रुद्ध = संवीत,
 आवृत AK. 3, 2, 40. H. 1476. — 6) verstopfen, erfüllen, anfüllen: अश्रुभिः
 काण्ठदेशम् KATHÁS. 17, 81. मुखं वाष्पे रूपाद्धि मे R. 4, 60, 1. कृत्स्तरुद्धमुखः
 52, 25. 53, 1. अश्रुधूमोद्भवो गन्धो (अश्रुधूमो भवेद्गन्धो ed. Calc., अश्रुधू-
 मोद्भवोद्गन्धो ed. Bomb.) रूपाद्धिव तपोवनम् MBh. 13, 6482. वेष्मनि धू-
 मरुद्धानि 14, 1741. रुद्धवसुधान्नेच्छान्निर्वीर्यस्य RĀGA-TAR. 1, 115. ज्वालारु-
 द्धिमिवोरगम् R. 4, 33, 41. ग्रासरुद्धवदन (वाजिनम्) VARĀH. BRH. S. 93, 7. —
 7) peinigern, hart mitnehmen: मर्म मे निशितः शरः । रूपाद्धि (= पीडयति
 Comm.) मृडु सोत्सेधं तीरमम्बुरयो यथा ॥ R. 2, 63, 43. — 8) रुद्ध = अ-
 वरुद्ध erhalten Bhāg. P. 2, 7, 21.

— caus. 1) zurückhalten, aufhalten: कारवान्द्रवतो ह्येष कर्षो रोधयते
 MBh. 8, 2903. — 2) Jmd durch Jmd einsperren lassen, mit dopp. acc.:
 रोधयामासुरिष्टं तां सुगोप्यमपि PAÑKĀT. 1, 14, 105. belagern lassen durch
 (instr.): लङ्का रोधयामास वानरैः RAGH. 12, 71. — 3) Macht ausüben auf,
 fesseln; mit acc.: न रोधयति मां योगो न सोद्धयं धर्म एव च Bhāg. P. 11,
 12, 1. — 4) quälen, peinigern: मैथिलीं कृता तेन मां च रोधयता भृशम् R.
 4, 5, 22. in dieser Bed. auch रुन्धयति in der Verbindung: शोकां मां रु-
 न्धयत्ययम् MBh. 3, 999. 12, 191. 733; vgl. रुध् caus. 2).

— अनु 1) versperren: शिलाभिः u. s. w.: ये मार्गमनु रुन्धति MBh. 13,
 1649. einschliessen, umzingeln: रुद्रानुचैर्मखो मकान् — अन्वरुद्ध्यत Bhāg.
 P. 4, 5, 13. fesseln, in seine Gewalt bringen, beherrschen: यावन्मनो रू-
 सा पूरुषस्य सन्नेन वा तमसा वानुरुद्धम् 5, 11, 4. तपोवनमनु रुन्धति ČĀK.
 18, 10, v. l. für तपोवनमुपरुन्धति in Verwirrung bringen. — 2) pass.
 oder Klasse 4. sich einschliessen in, sich hängen an (acc.): सौषधीरनु
 रुध्यसे RV. 8, 43, 9; vgl. P. 6, 1, 134, Sch. — 3) kleben an (acc.): अनुरु-
 न्ध्यादधं च्यरुम् so v. a. während dreier Tage wird er der Sünde nicht los
 M. 5, 63. so v. a. Jmd auf dem Fusse folgen: अयमनु रुन्धमानस्तापसी-
 भ्यामबालसन्नेन बालः ČĀK. Ch. 151, 2 (अनुवध्यमानः die andere Rec.).
 पुमांसमनु रुद्ध्य जाता so v. a. unmittelbar nach P. 3, 2, 100, Sch. an Jmd
 oder Etwas hängen, Jmd zugethan sein, einer Sache sich hingeben, ob-
 liegen, sich angelegen sein lassen; med. und act.: एके तमनु रुन्धाना ज्ञा-
 तयः पर्युपास्त Bhāg. P. 10, 2, 4. नानुरुन्धति श्रोतृचित्तानुवर्तनम् RĀGA-
 TAR. 3, 95. मानुषं लोकमासाद्य तस्मात्तमनु रुन्धतः (कृत्स्नस्य) Bhāg. P. 10,
 7, 3. सर्गादि यो ऽस्यानुरुपाद्धि 4, 17, 33. gewöhnlich अनु रुद्ध्यसे (कामे Da-
 rut. 26, 65) und ऽत्ति in dieser Bed.: पत्नमद्यापि — राममेवानुरुद्ध्यसे MBh.
 3, 16194. नानुरुद्ध्ये विरुद्ध्ये वा न द्वेषि न च कामये 12, 9349. 15, 966. स-

23*